Date

Page (1)

Topic 6.

अव्ययीभाव - 4

नदीभिश्च ।

नदीभिः सह संख्या समस्यते।

नदियों के साथ संख्या का समास होता है और वह समास अव्ययी-भाव-संज्ञक होता है। 'समाहारे चायमिष्यते' वार्तिक से यह समाहार (समुदाय) अर्थ में ही होता है। उदाहरण के लिए 'पञ्चगङ्गम्' (पाँच गङ्गाओं का समाहार) में समाहार अर्थ में संख्यावाचक 'पञ्चन्' का नदी विशेषवाचक 'गङ्गा' से समास हुआ है। इसी प्रकार 'द्वियमुनम' (दो यमुनाओं का समाहार) में भी 'द्वि' और 'यमुना' का समास हुआ है।

(वा०) समाहारे चायमिष्यते।

पञ्चगङ्गम् । द्वियमुनम् ।

तद्धिताः ।

आ पञ्चमसमाप्तेरधिकारोऽयम् ।

इस सूत्र से लेकर 'निष्प्रवाणिश्च' तक जिन प्रत्ययों का विधान किया गया है, उन्हें तद्धित कहते हैं।

अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः।
शरदादिभ्यष्टच् स्यात् समासान्तोऽव्ययीभावे। शरदः समीपम् - उपशरदम्।
प्रतिविपाशम्।

(ग० सू०) जराया जरस्। उपजरसमित्यादि।

अव्ययीभाव में शरद् आदि से समासान्त टच् प्रत्यय होता है। 'टच्' में टकार और चकार इत्संज्ञक है अतः केवल 'अ' ही शेष रहता है। उदाहरण के लिए 'शरदः समीपम्' - इस विग्रह में समीप अर्थ में वर्तमान 'उप' अव्यय का अव्यय विभक्ति - ०। से सुबन्त 'शरदः' के साथ समास होकर 'उपशरद्' रूप बनता है। इस स्थिति में प्रकृत सूत्र से विहित प्रत्यय 'टच्' होकर 'उपशरद्-अ' = 'उपशरद' रूप बनने पर प्रातिपदिक संज्ञा हो प्रथमा के एकवचन में 'उपशरदम्' रूप सिद्ध होता है। 'विपाश्' का शरदादिगण में ग्रहण होता है, अतः 'लक्षणेनाभिप्रती आभिमुख्ये' ~~से 'विपाश्' का शरदादिगण में~~

से समास होकर 'प्रतिविपाश्' रूप बनने पर 'टच्' आदि होकर 'प्रतिविपाशम्' रूप सिद्ध होता है। इसी प्रकार जरायाः समीपम् (बुढ़ापे के निकट) इस विग्रह में 'उप' अव्यय का अव्ययं विभक्ति — ० से सुबन्त जरायाः के साथ समास होने पर 'जरा' के स्थान पर 'जरस्' तथा 'टच्' आदि होकर 'उपजरसम्' रूप बनता है।

अनच्

अन्नन्तादव्ययीभावात् टच् स्यात्।

अन्नन्त अव्ययीभाव (जिसके अन्त में 'अन्' हो) से समासान्त 'टच्' (अ) प्रत्यय होता है। उदाहरण के लिए ('राज्ञः समीपम्' (राजा के समीप) इस विग्रह में समीप अर्थ में वर्तमान 'उप' अव्यय का अव्ययं विभक्ति — ० से सुबन्त 'राज्ञः' के साथ समास होकर 'उपराजन्' रूप बनता है। यहाँ अन्त में 'अन्' होने के कारण प्रकृत सूत्र से 'टच्' होकर 'उपराजन् अ' रूप बनेगा।